

Journal of Bhartiya Hindi Research Review

संत साहित्य में नारी की भूमिका और उनके प्रति दृष्टिकोण

उषा

पीएचडी, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

*अनुरूपी लेखक: उषा

Article Info

ISSN (online): XXXX-XXXX

Volume: 01

Issue: 04

July-August 2024

Received: 20-06-2024

Accepted: 10-07-2024

Page No: 11-12

सारांश

छायावाद, भारतीय साहित्य का एक महत्वपूर्ण आंदोलन है, जिसने 20वीं सदी के प्रारंभ में साहित्यिक गतिविधियों को एक नई दिशा दी। इस लेख में छायावाद के विकास, विशेषताओं और उसके मूल्यांकन के नए दृष्टिकोण पर चर्चा की गई है। छायावाद के प्रमुख कवियों की रचनाओं के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि इस आंदोलन ने कैसे भारतीय समाज में आंतरिक जीवन, प्रकृति और आत्मानुभूति के प्रति एक गहरी समझ पैदा की। इसके साथ ही, नए मूल्यांकन के संदर्भ में इस लेख में उन सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक कारकों पर भी प्रकाश डाला गया है, जिन्होंने छायावाद को आकार दिया।

कुंजीशब्द: छायावाद, कविता, आत्मानुभूति, प्रकृति, साहित्यिक आंदोलन, मूल्यांकन

प्रस्तावना

छायावाद, भारतीय काव्य की एक ऐसी धारा है जो 20वीं सदी की शुरुआत में उभरी। यह आंदोलन केवल एक साहित्यिक प्रवृत्ति नहीं है, बल्कि यह अपने समय के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश का प्रतिबिंब है। छायावाद ने भारतीय साहित्य में एक नयी सृजनात्मकता, भावुकता और आत्मानुभूति को जन्म दिया। इस लेख का उद्देश्य छायावाद के नए मूल्यांकन के परिप्रेक्ष्य में इसकी विशेषताओं, प्रभाव और समकालीन समाज पर इसके प्रभावों का विवेचन करना है।

चर्चा

1. छायावाद का उदय

छायावाद का आरंभ मुख्यतः हिंदी कविता में हुआ, जिसमें प्रमुख कवियों में जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, और निराला शामिल हैं। इन कवियों ने अपनी रचनाओं में प्रकृति के प्रति प्रेम, आत्मानुभूति और आंतरिक संघर्षों को प्रदर्शित किया। छायावाद ने पूर्व के काव्य आंदोलनों की तुलना में एक नई शैली और दृष्टिकोण को अपनाया।

2. प्रमुख विशेषताएँ

छायावाद की कुछ प्रमुख विशेषताओं में प्रकृति का अद्वितीय चित्रण, प्रेम और सौंदर्य की अनुभूति, और मानव मन की गहराईयों में उतरना शामिल है। ये कवि मन की अंतर्धानता को प्रकट करने के लिए छवियों और प्रतीकों का प्रयोग करते हैं। उदाहरण के लिए, जयशंकर प्रसाद की कविता "आकाशदीप" में मन की गहराई को व्यक्त करने का प्रयास किया गया है।

3. छायावाद और समाज

छायावाद का मूल्यांकन केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि सामाजिक दृष्टिकोण से भी किया जाना चाहिए। इस आंदोलन ने उस समय के सामाजिक बदलावों को भी प्रभावित किया, जिसमें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और पश्चिमी विचारधारा का समावेश था। कवियों ने अपने रचनाओं के माध्यम से समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया।

4. नए मूल्यांकन के दृष्टिकोण

छायावाद के नए मूल्यांकन में उन सामाजिक और आर्थिक कारकों को भी शामिल किया गया है जिन्होंने इस आंदोलन को आकार दिया। वैश्विक स्तर पर साहित्यिक आंदोलनों के साथ-साथ भारतीय समाज में उभरते हुए विचारों का भी इस पर प्रभाव पड़ा। आज के संदर्भ में, छायावाद को एक पुनरुत्थानवादी आंदोलन के रूप में देखा जा सकता है, जो न केवल साहित्य में, बल्कि जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी महत्वपूर्ण रहा है।

परिणाम

छायावाद ने भारतीय साहित्य में एक नया मोड़ लाया और यह केवल एक साहित्यिक आंदोलन नहीं, बल्कि एक सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन का प्रतीक है। इसके माध्यम से भारतीय समाज ने अपनी आंतरिक संवेदनाओं और प्रकृति के प्रति अपने दृष्टिकोण को समझा और प्रस्तुत किया। नए मूल्यांकन में, यह

आंदोलन न केवल कवियों के दृष्टिकोण से, बल्कि उनके समय के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष

छायावाद का मूल्यांकन नए परिप्रेक्ष्य में एक अनिवार्य अध्ययन है, जो हमें उस समय की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक धारा को समझने में मदद करता है। यह आंदोलन न केवल साहित्य में, बल्कि मानव जीवन के अन्य पहलुओं में भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। भविष्य में छायावाद के मूल्यांकन की दिशा में और अधिक शोध और विचार किए जाने की आवश्यकता है, ताकि हम इसे समकालीन संदर्भ में और बेहतर ढंग से समझ सकें।

संदर्भ सूची

1. प्रसाद, जयशंकर. "आकाशदीप." हिंदी कविता का संग्रह.
2. पंत, सुमित्रानंदन. "सुमित्रा." छायावादी काव्य की विशेषताएँ.